जन आस्था की प्रेरणा से ओतप्रोत मकर संक्रांति का महापर्व

अमृत वाणी

पाषाण के भीतर भी मधुर स्रोत होते हैं, उसमें मदिरा नहीं शीतल जल की धारा बहती है।

– जयशंकर प्रसाद

अदालत का अहम फैसला

किसान आंदोलन के मामले में देश के सर्वोच्च न्यायालय ने कल अपना अहम आदेश दे दिया। जैसा कि अदालत ने एक दिन पहले ही सरकार से कहा था कि अगर आप नए कृषि कानून पर रोक नही लगाएगें तो हम लगा देगे उसी अनुसार अदालत ने मंगलवार को अपना आदेश सुनाते हुए तीनों नए कृषि कानूनों पर अपने अगले आदेश तक रोक लगा दिया। साथ ही एक चार सदस्यीय कमेटी का गठन भी किया जो नए कृषि कानून और उस पर सरकार और किसानों के विचारों को समझेगी और फिर सुप्रीम कोर्ट को समक्ष अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी।

अदालत ने यह स्पष्ट किया है कि उसने कृषि कानून पर नही बल्कि उसके क्रियान्वयन पर रोक लगाया है। कृषि कानून के खिलाफ लंबे समय से चल रहे किसानों के आंदोलन के परिपेक्ष्य में जानमाल के नुकसान या संभावित हिंसा की आशंका जैसी असाधारण परिस्थिति में ऐसा कदम उठाना जरुरी था।

दोनों पक्षों को समिति के समक्ष अपनी बात रखनी होगी जिसकी समीक्षा पश्चात समिति अपनी रिपोर्ट सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष रखेगी। तात्पर्य यह कि अब इस मामले में कमेटी की निर्णायक भूमिका होगी।

दूसरी ओर किसान संगठन इस फैसले से खुश नही है। उनका कहना है कि चूंकि मोदी सरकार ने इस नए कृषि कानून को संसद में पारित कराया है, अतः उसे ही इसे रद्द करके खत्म करना चाहिए। किसान संगठनो का कहना है कि सर्वोच्च न्यायालय भी यह मानती है कि किसी भी मामले में संसद की मुहर कानून बनाने की अंतिम कार्यवाही होती है।

अतः वहां पारित कानून को मोदी सरकार को ही वापस लेनी चाहिए। इस पर सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि यह सच है कि संसद किसी भी विषय को कानून का दर्जा देने के लिए अंतिम और निर्णायक इकाई है मगर सर्वोच्च न्यायालय उसके किसी भी कार्यवाही पर रोक लगाने में सक्षम है और कोई ताकत उसे समिति बनाने से रोक नही सकती।

दरअसल किसान संगठनों को सुप्रीम कोर्ट व्दारा गठिच समिति पर भरोसा नही है। उनका मानना है कि समिति के सभी सदस्य शुरु से इस कानून का समर्थन करते हुए लेख लिखते रहे है अतः उनके व्दारा किसानों के साथ न्याय की आशा करना आसान नही है। इसलिए किसानों ने कानून वापस होते तक अपना शांतिपूर्ण आंदोलन जारी रखने का फैसला किया है मगर दूसरी ओर अदालत का निर्देश भी स्पष्ट एवं अहम है कि अगर समस्या का हल करना है तो कमेटी के समक्ष आना ही होगा।

अब देखना यह होगा कि आने वाले समय में यह मुद्दा कौन सा रुख लेता है।

राज-काज

वॉट्सऐप का विश्वासघात!

सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म वॉट्सऐप की नई पॉलिसी को लेकर दुनिया भर में इसके यूजर्स में पैदा हुआ गुस्सा जायज है। खासकर वॉट्सऐप के इस कदम का भारत में असर देखा जाएगा, जो इस प्लैटफॉर्म का सबसे बड़ा मार्केट है। वॉट्सऐप ने अब यूजर्स के सामने सिर्फ दो ही विकल्प छोड़े हैं- या तो वे उसकी शर्तें मान कर अपनी प्राइवेसी को खत्म करें या फिर अपना अकाउंट डिलीट करें। शर्तें मानना है या नहीं, इस बारे में सोचने के लिए 8 फरवरी तक का वक्त वॉट्सऐप की मालिक कंपनी फेसबुक ने दिया है। गौरतलब है कि दुनियाभर में 200 करोड़ से ज्यादा यूजर्स वॉट्सऐप इस्तेमाल करते हैं। नया साल शुरू होते ही यूजर्स को वॉट्सऐप पर नए टर्म्स और प्राइवेसी पॉलिसी का अपडेट मिलने लगा। इसमें लिखा है कि यूजर्स को ये पॉलिसी माननी होगी। इसमें मूल बात यह है कि वॉट्सऐप पर आप जो कंटेंट अपलोड, सबमिट, स्टोर, सेंड या रिसीव करते हैं, कंपनी उन्हें कहीं भी यूज, रिशेड्यूस, डिस्ट्रीब्यूट और डिस्प्ले कर सकती है। जाहिर है, इस पॉलिसी के जरिए वॉट्सऐप अपने 200 करोड़ से ज्यादा यूजर्स का डेटा एक्सेस कर पाएगी। यानी वो उनके डेटा को दूसरे प्लेटफॉर्म पर शेयर भी कर पाएगी। नई पॉलिसी के नोटिफिकेशन में उसने साफ लिखा है कि अब वॉट्सऐप आपकी हर सूचना अपनी पेरेंट कंपनी फेसबुक और इंस्टाग्राम के साथ शेयर करेगा। यानी वॉट्सऐप अपने यूजर्स के डेटा का इस्तेमाल करके पैसे कमा सकती है। दूसरी तरफ यूजर्स की प्राइवेसी पूरी तरह खत्म हो जाएगी। मसलन, भुगतान के लिए वॉट्सऐप का इस्तेमाल करने वाले यूजर्स के बैंक का नाम, कितनी राशि और डिलीवरी का स्थान सभी को ये प्लैटफॉर्म ट्रैक करेगा। इससे फेसबुक-इंस्टाग्राम भी आपके फाइनेंशियल ट्रांजेक्शन जान जाएंगे।

मकर संक्राति (14 जनवरी) पर विशेष

भारत में सालों भर पर्वों-त्योहारों की श्रृंखला चलती रहती है। सभी पर्वों-त्योहारों का अपना कुछ खास महत्व है, जिसे ऋषियों ने निज दिव्य-दृष्टि से जन-जन के लिए उपयोगी मानकर उसका सृजन किया है। मकर संक्रांति का भी अपना कुछ खास महत्व है। जिसकी अनुभूतियाँ कुछ अधिक गहराई के साथ जुड़ी है। यह जन-आस्था, श्रद्धा और लोकरुचि का पावन महापर्व है।

इस पर्व को सविता के अमृत-तत्व के अवगाहन और संदोहन का भी पर्व कहते हैं। इस पर्व की खोज छान्दोग्य उपनिषद में वर्णित मधुविद्या के प्रवर्तक महर्षि प्रवाहण ने की थी। षिषिर ऋतु में सविता के अमृत तत्व की प्रधानता रहती है। रामायण के अनुसार साधक एक महीने के कल्पवास में चंद्रायण तप, मधु विद्या की साधना करते थे। ब्रह्माण्ड को अपने प्राणों से अनुप्राणित करने वाले भगवान भास्कर की उपासना का पावन पर्व भी इसे कहते हैं। इस षुभ-वेला में जन-मानस की यह उमड़ने वाली सात्विक भावना राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना को पुष्ट करती है। इस लोक-संस्कृति पावन पर्व मकर संक्रांति को संपूर्ण भारत में बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस पावन पर्व को बंगाल में बिसु, बिहार में दही-चूड़ा, महाराष्ट्र में मकर-संक्रांति, दक्षिण में तिल-गुड़, तमिलनाडु में पोंगल, असम में भोगाली बिहु, पंजाब में लोहड़ी या माघी, मध्यप्रदेष में घुघुतिया,उत्तरप्रदेष में तिल या खिचड़ी संक्रांति के नाम से जाना जाता है। सूर्य के एक राषि से दूसरी राषि में गमन को ही संक्रांति कहते है। भगवान भास्कर मकर संक्रांति को दक्षिणायन से उत्तरायण में प्रवेष करते हैं। मकर संक्रांति पौष मास की कड़ाके की सर्दी से वातावरण में गर्मी की आहट की सूचना दक्षिणायन से उत्तायण में प्रवेष करने को कहा जाता है। पृथ्वी की परिक्रमा करते समय सूर्य जिस राषि में दिखाई देता है, वही सूर्य की राषि कही जाती है। संक्रांति बारह राषियों में सूर्य का संक्रमण है। मकर संक्रांति नवम् धनु राषि से दषम मकर राषि में संक्रमण है। संक्रमण पर्व मकर संक्रांति का 'मकर''षब्द का विषेष महत्व है। हरीति ऋषि के अनुसार मकर मत्स्य वर्ग के जल-जंतुओं में सर्वश्रेष्ठ है। यह गंगा का वाहन है। वायुपुराण में 'मकर' नौ निधियों में से एक है। कामदेव की पताका का प्रतीक मकर है। कामदेव को मकरध्वज कहते हैं। महाकवि सतसई ने भगवान श्रीकृष्ण के कुण्डलों का आकार मकरध्वज बताया है। बारह राषियों में दसवीं राषि का नाम मकर है। सुमेरू पर्वत के उत्तर में दो पर्वत में एक का नाम मकर है। भीष्म पितामह सूर्य के उत्तरायण होने पर षरीर के त्याग का संकल्प दर्षन करने आये हंसरूप ऋषियों से दुहराते हैं। उत्तरायण सूर्य के ताप से षीत का प्रकोप कम हो जाता है। चरक संहिता में षीत के प्रकोप के निवारण के लिए घी, तेल, तिल, गुड़, धुप-सेवन, गर्म पानी सेवन की सलाह देते हैं। षिव रहस्य ग्रंथ में मकर संक्रांति के अवसर पर हवन-पूजा, खान-पान में तिल-खिचड़ी

के उपयोग और तिल-दान करने को बताया गया है। इससे पाप कटते हैं। रबी, चना का फसल को सूर्य के उत्तरायण होने पर उगने और पकने की स्थिति बन पाती है। मकर संक्रांति में तिल आदि के दान के अलावा ज्ञानदान की भारी महिमा है। स्नान-दान करना भारतीय जनमानस की चिर-पुरातन लोकमान्यता है, परन्तु स्नान नदी मेंथरीर धोने एवं दान सिर्फवस्तुओं के दान तक सीमित नहीं है। स्नान से जहाँ षरीर, वाणी एवं मन की पवित्रता अपेक्षित है, वहीं दान का सर्वश्रेष्ठ प्रकार सत्कार्य के लिए अपनी उपार्जित सम्पदा का एक अंष, समय अथवा स्वयं का ही उत्सर्ग है। पद्मपुराण में मकर संक्रान्ति के दिन दान के बारे में इस प्रकार स्पष्ट वर्णित है-जब दिवाकर मकरस्थ होते हैं तब सभी समय, प्रत्येक दिन एवं सभी देष व स्थान षुभ है और हर व्यक्ति श्रेष्ठतम प्रकार ज्ञान-दान का सुपात्र है। ज्योतिषषास्त्र के अनुसार, मकरराषि के स्वामी सूर्य पुत्र ष्शनिदेव हैं। ष्शनि के प्रकोप से मुक्ति पाने के लिए इस दिन गायत्री महामंत्र से की गई सूर्योपासना करने को श्रेष्ठ माना गया है। स्कन्दपुराण में भी मकर संक्रान्ति के दिन सूर्य उपासना के साथ यज्ञ हवन एवं दान को पुण्य-फलदायक बताया है। महाभारत में तिल दान एवं तिल खाने की बात को इस तरह स्वीकारा गया है। अर्थात-तिल का दान, तिल का भक्षण तथा प्रातः तिल का उबटन लगाकर स्नान करने तथा मुख से तिल की महिमा औरों को बताये, क्योंकि यह तिल समस्त पाप रूप रोगों का ष्षमन करता है। यही कारण है कि मकर संक्रान्ति पर तिलदान एवं तिल-सेवन की प्रथा समूचे भारतवर्ष में प्रचलित है। महाराष्ट्र की महिलाएँ तिल के साथ हल्दी और कुमकुम के साथ सतू दान भी करती है। हरियाणा एवं उत्तरप्रदेष की सब बधुएँ अपनी-अपनी रीति के अनुसार इस दिन अपने पूज्यजनों को तिल-ताम्बूल एवं कम्बल आदि गरम वस्त्र देकर उनका सत्कार करती हैं। तिल स्नेह का प्रतीक है तो गुड़ मिठास का। इन दोनों का समन्वय कर तिलोहड़ी के रूप में कई जगह मकर संक्रन्ति का आयोजन होता है। इस दिन स्नान-दान का महत्व बताया गया है। माघ स्नान व्रत एक माह का होता है, जिसका षुभारंभ मकर संक्रांति से होता है। इस दिन सूर्य अपने पुत्र षनि से मिलते हैं। रामायण में ''माघ मकरगत रवि जब होई। तीरथपतिहिं आव सब कोई।।'' माघ में जब सूर्य मकर राषि में जाते हैं,तब सब लोग तीरथराज प्रयाग को आते हैं। देवता, दैत्य, किन्नर और मनुष्य सब आदर पूर्वक त्रिवेणी में स्नान करते हैं। कुछ विषेष स्थलों पर एक माह का मेला भी संक्रांति से षुरू होता है। प्रयाग का माघ मेला, गोरखनाथ धाम का खिचड़ी मेला, उत्तरकाषी का माघ मेला, कुमाऊँ का उत्तरायणी मेला, उड़ीसा का हरि बोल मेला, छत्तीसगढ का राजिम मेला, मध्यप्रदेष का प्रमुख बरमान मेला, हरियाणा का सूरजकुंड मेला, गंगासागर मेला लगता है और यह माघ मासे में सभी साधक तपस्वी-तीर्थराज प्रयाग में आकर अपनी साधनात्मक प्रक्रियाओं को पूरा करते थे और फिर यथाक्रम वापस लौटते थे। वैदिक काल में चलती आ रही इस परम्परा को किन्हीं अंषों में आज भी देखा जा रहा है। इस पुण्य परम्परा में यत्किंचत व्यतिरेक खिलजी वंष के षासक अलाउद्दीन खिलजी के समय आया था। उसने अपनी कट्टर धर्मान्धता और क्रूर स्वभाव के वषीभूत होकर साधकों, तपस्वी, तीर्थयात्रियों के साथ बर्बरता का व्यवहार करना षुरू किया। चारों ओर भय और दहषत का वातावरण फैल गया। सभी तरफ सहमें- भयभीत लोग दिखाई देते थे। एक बार तो लगा कि षताब्दियों सहस्राब्दियों से चलती रही यह परम्परा समाप्त हो जाएगी। ऐसे समय आविर्भाव हुआ महायोगी गोरखनाथ का। कठोर ब्रह्मचर्य, प्रचण्ड तपस्या एवं हठयोग की गहन साधनाओं से प्रखर हुई उनकी अन्तचेतना की हुँकार सुनकर दलित एवं दमित व्यक्तियों ने अपने में एक नयी षक्ति को अनुभव किया। जाति-पाति, धर्म-वंष का भेद भूलकर लोग उनके नेतृत्व में खिलजी के आतंक का सामना करने के लिए उठ खड़े हुए। तिरस्कृत समझे जाने वाले लोगों में से उन्होंने गहिनीनाथ एवं चरपट नाथ जैसे महान व्यक्तित्व गढ़े। उनके अलख निरंजन के नारे सुनकर राष्ट्र चेतना में अलौकिक जागृति आयी। 'न दैन्य न पलायनं' का उद्घोष होने लगा। आक्रान्ता खिलजी का बल भी कम न था। अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तत्पर नाथ योगियों के पास इतना भी समय न था कि वे ठीक से खाना भी खा सकें। आक्रमण एवं आतंक के कुहासे को हर-हमेषा को मिटा देने के लिए तत्पर इन योगियों के सामने यह समस्या उठ खड़ी हुई कि वे खाएँ क्या? इस सवाल का हल भी महागुरू गोरखनाथ ने खोजा। दाल-चावल सब्जी अलग-अलग पकाने की जरूरत भी क्या? क्यों न दाल-चावल को एक साथ बना लिया जाय। इस नए व्यंजन को उन्होंने खिचड़ी नाम दिया। षायद कम ही लोग जानते होंगे कि सर्व प्रिय व्यंजन खिचड़ी को ऐसी मान्यता दी कि यह साधकों का एक सरल सुपाच्य एवं सात्विक आहार बन गया। उनकी प्राण-प्रण से लगायी गयी बाजी सफल हुई। जन चेतना ने खिलजी के आतंक से मुक्ति पायी। मकर संक्रान्ति गोरखनाथ का विजय पर्व बन गया और विजय प्रतीक बनी खिचड़ी। माघ मास की साधना एवं मकर-संक्रान्ति का पर्व फिर से जीवन्त एवं जागृत हो उठा। चारों ओर उनके प्रति जन श्रद्धा से विभोर जन चेतना ने उन्हें आदिनाथ भगवान षिव के अवतार के रूप में स्वीकारा और इस पुण्य पर्व पर साधुओं को खिचड़ी का दान देने एवं खिचड़ी खाने की प्रथा भी चल पड़ी। जिसे आज भी मकर संक्रान्ति के पर्व पर देखा जा सकता है। इस दिन जन श्रद्धा उत्तर प्रदेष के गोरखनाथ के मन्दिर में खिचड़ी के दान के रूप में साकार देखी जा सकती है।

मुकेश ऋषि
(ये लेखक के अपने विचार है)

ऋतु परिवर्तन का संदेशवाहक पर्व
मकर संक्रान्ति

अपने भक्तों साधकों का उद्धार करने वाले सूर्यदेव समस्त संसार मे एक मात्र दर्शनीय प्रकाशक है तथा विस्तृत अंतरिक्ष को सभी ओर से प्रकाशित करते हैं। सूर्यदेव देवगणो मनुष्यो और स्वर्गलोक वासियों के सामने नियमित रूप से उदित होते हैं ताकि तीन लोको के निवासी सूर्य का दर्शन कर सकें। समस्त विश्व को दृष्टि प्रदान करने के लिए सम्पूर्ण प्राणियो के ज्ञाता सूर्यदेव की ज्योतिर्मयी रश्मियाँ विशेष रूप से प्रकाशित होती हैं। सबको प्रकाश देने वाले सूर्यदेव के उदित होते ही रात्रि के साथ तारा मण्डल वैसे ही छिप जाते है जैसे चोर छिप जाते हैं। प्रज्जलित हुई अग्नि की किरणों के समान सूर्यदेव की प्रकाश रश्मियाँ सम्पूर्ण जीव.जगत को प्रकाशित करती हैं।

दिन एवं रात में समय को विभाजित करते हुए अन्तरिक्ष एवं त्रिलोक में सूर्य भ्रमण करते है जिसमे सभी प्राणियों को लाभ प्राप्त होता है।इसीलिए भक्तजन तमिस्रा से दूर श्रेष्ठतम ज्योति को देखते हुए ज्योति स्वरूप और देवो मे उत्कृष्टतम ज्योति सूर्य को प्रार्थना करते हुए कहते है कि मित्रों के मित्र सूर्यदेव उदित होकर आकाश मे उठते हुए हृदयरोग शरीर की कान्ति का हरण करने वाले रोगों को नष्ट करें । हम अपने शरीर को क्षीण करने वाले रोग को शुको तोतों रोपणा का वृक्षों एवं हरिद्रवी हरी वनस्पतियों में स्थापित करते हैं। हे सूर्यदेव अपने सम्पूर्ण तेजों से उदित होकर हमारे सभी रोगो को वशवर्ती करें। हम उन रोगो के वश मे कभी न आवें।

वेद उपनिषदादि ग्रन्थों के अनुसार महर्षि कश्यप के पुत्र जो अदिति के गर्भ से उत्पन्न हुए भगवान् सूर्य के स्वरूप प्राकट्य.कथा आयुष शक्ति महिमा एवं उपासना प्रक्रिया का विशद विवरण भविष्य पुराण मत्स्यपुराण पद्मपुराण ब्रह्मपुराण मार्कण्डेय पुराण साम्ब पुराणादि ग्रन्थों में अंकित है। सूर्य से सम्बधित स्वतंत्र सूर्य पुराण सौर पुराणादि अनेक ग्रन्थ प्राप्य हैं । पौराणिक आख्यानों के अनुसार ब्रह्मा ने देवताओं को यज्ञ भाग का भोक्ता एवं त्रिभुवन का स्वामी बनाया था किन्तु कालान्तर में देवताओं के सौतेले भाई दैत्यों दानवों और राक्षसों ने मिलकर देवताओं के विरुद्ध में मोर्चा खोल दिया । अन्त में इस सम्मिलित सेना ने देवताओं को परजित कर उनके पदों एवं अधिकारों को छीन लिया । अपने पुत्रों की ऐसे दुर्गति देख देवताओं की माता अदिति उद्वग्नि हो गई और दैत्यों दानवों और राक्षसों की भयंकर क्रूरतम कार्वाइयों से त्राण दिलाने पाने के लिए अदिति निराहार रहकर भगवन सूर्य की उपासना करने लगी । माता अदिति की कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर सूर्य ने उन्हें वरदान दिया कि अपने सहस्त्रों अंशों के साथ तुम्हारे गर्भ से अवतीर्ण होकर मैं तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करूँगा । सूर्यदेव ने शीघ्र ही अपने वरदान को पूर्ण किया तथा अपनी क्रूर दृष्टि से देखकर आततायी दैत्य दानव एवं राक्षस रूपी शत्रुओं का नाश कर वेदमार्ग को पुनः स्थापित किया और देवताओं को उनके अपने पद और अधिकार पुनः वापस दिलाये । भगवान् सूर्य अदिति के पुत्र होने के कारण आदित्य कहलाये । इस पौराणिक आख्यान अदितेरपत्यं पुमान् आदित्यः ष्के अर्थ में कतिपय विद्वान् वेदों में आये आदित्य ऋग्वेद 1/50/13 ए तथा आदितेय ऋग्वेद 10.88.11 को देखकर इस सन्दर्भ का सम्बन्ध वेदों से जोड़ते हैं लेकिन सत्य बात यह है कि वेदों में मानव इतिहास नहीं है ।

पुराणादि ग्रन्थों के अनुसार सूर्य का रंग लाल है । आदित्यलोक में भगवान् सूर्यनारायण का साकार विग्रह है । रक्तकमल पर विराजमान उनका वर्ण हिरण्मय तथा उनकी चार भुजाएं हैं । उनके दो भुजाओं में पद्म एवं दो हाथ अभय एवं वरमुद्रा से सुशोभित हैं । वे सप्ताश्वयुक्त रथ में स्थित हैं । मत्स्यपुराण 94ध्1 में सूर्य का ध्यान के सन्दर्भ में अंकित है कि सूर्यदेव की दो भुजाएं हैं वे कमल के आसन पर विराजमान रहते हैं उनके दोनों हाथों में कमल सुशोभित रहते हैं । उनकी कान्ति कमल के भीतरी भाग की सी है और वे सात घोड़े तथा सात रस्सियों से जुड़े रथ पर विराजमान रहते हैं । श्रीमद्भागवत पुराण के अनुसार सूर्य का वाहन रथ कहलाता है । वेदस्वरूप भगवान् सूर्य की भान्ति ही उनका रथ भी वेदस्वरूप है । इनके रथ में उपस्थित एक चक्र संवत्सर कहा जाता है । संवत्सर की भान्ति ही रथ में मासरूप बारह अरेए ऋतुरूप छः नेमियाँ और तीन नाभियाँ हैं । इसी अध्याय के 5ध21ध्5 एवं ऋग्वेद के अनुसार सूर्य के रथ में अरुण नामक सारथि ने गायत्री आदि छंदों के साथ घोड़े जोत रखे हैं । पुराणों के अनुसार सारथि का मुख भगवान् सूर्य की ओर रहता है । इनके साथ साठ हजार बालखिल्य स्वस्तिवाचन एवं स्तुतिगान करते हुए चलते हैं । ऋषि मुनि गन्धर्व अप्सरा नाग यक्ष राक्षस एवं देवता आत्मरूप सूर्यनारायण की उपासना करते हुए साथ चलते हैं । सर्वद्रष्टा सूर्यदेव तेजस्वी ज्वालाओं से युक्त दिव्यता को धारण करते हुए सप्तवर्णी किरणों रूपी अश्वो के रथ मे सुशोभित होते हैं। पवित्रता प्रदान करने वाले ज्ञान सम्पन्न ऊर्ध्वगामी सूर्यदेव अपने सप्तवर्णी अश्वों से किरणों से सुशोभित रथ में शोभायमान होते हैं।

भगवान् सूर्य की दो पत्नियाँ . संज्ञा एवं छिंधुया निक्षुभा हैं । पुराणों में संज्ञा के सुरेणु राज्ञी त्वाष्ट्री एवं प्रभादि अनेक नाम प्राप्त होते हैं तथा निक्षुभा का अन्य नाम छाया है । विश्वकर्मा तवाष्ट्रा की पुत्री संज्ञा से सूर्य को वैवस्वत मनु यम यमी यमुना अश्विनीकुमार द्वय एवं रैवन्त और छाया से शनि तपती विष्टि एवं सावर्णीमनु ये दस सन्तान प्राप्त हुईं ।

अशोक पवट्र
(ये लेखक के अपने विचार है)

सबसे गर्म साल

साल 2020 का 2016 के साथ संयुक्त रूप से ज्ञात इतिहास में दुनिया के सबसे गर्म साल के रूप में दर्ज होना एकबारगी चौंका देता है। पहली बात तो यह कि साल 2016 अल नीनो इफेक्ट के लिए चर्चा में रहा था जो वातावरण में गर्मी बढ़ाता है। इसके उलट साल 2020 में ला नीना इफेक्ट रहा जिसे अल नीनो के उलट दुनिया को ठंडी करने वाली परिघटना कहा जा सकता है। इससे भी बड़ी बात यह है कि 2020 में कोरोना वायरस ने ऐसा तहलका मचाया कि मानव समाज के सारे चक्के जैसे एकाएक थम

लॉकडाउन के चलते तमाम लोग अपने घरों में बंद हो गए और हवाई जहाज, गाड़ी, मोटर आदि से लेकर फैक्ट्रियों की मशीनें तक जाम हो गईं। इसका नतीजा इस रूप में सामने आया कि आसमान साफ नजर आने लगा, हवा में प्रदूषण का स्तर नीचे चला गया, नदियों में गंदगी कम दर्ज की गई और मनुष्यों से इतर बाकी सारे जीव ज्यादा चैन और सुकून से घूमने लगे। यह स्थिति साल के तीन चौथाई हिस्से में व्याप्त रही, जिससे यह नतीजा निकालना स्वाभाविक था कि कार्बन उत्सर्जन में कमी के कारण कम से कम ग्लोबल वॉर्मिंग की दृष्टि से यह साल आदर्श माना जाएगा।

इन अनुमानों के विपरीत 2020 का सबसे गर्म साल साबित होना इस मायने में निराश करता है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था ठप होने के बावजूद ग्लोबल वॉर्मिंग के मोर्चे पर हम कुछ हासिल नहीं कर पाए। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि ग्लोबल वॉर्मिंग की प्रक्रिया को यहां तक लाने में भले मनुष्य समाज का सीधा हाथ रहा हो, पर अब यह इतनी जटिल हो चुकी है कि हम चाहकर भी इसपर सीधा नियंत्रण नहीं बना सकते। ऐसी ग्रह-स्तरीय समस्याओं से निपटने के लिए इंसानी समाज के लिए जैसा आचरण जरूरी बताया जा रहा था, अनिच्छा से ही सही पर पिछले साल हमने उसे अपने ऊपर लागू किया। इसके बावजूद हालात बिगड़ते गए।

आर्कटिक के कुछ हिस्सों और उत्तरी साइबेरिया में इस साल तापमान में काफी उतार-चढ़ाव देखा गया। पश्चिमी साइबेरिया क्षेत्र में भी ठंड और बर्फ असाधारिक रूप से गर्म रहे। सबसे बड़ी बात यह कि जंगलों की आग ने आर्कटिक क्षेत्र में इस साल कुछ ज्यादा ही सक्रियता दिखाई। आर्कटिक सर्कल और नॉर्थ पोल के बीच वाइल्डफायर की वजह से 2020 में 244 मेगाटन कार्बन डाइऑक्साइड निकली जो 2019 के मुकाबले 33 फीसदी ज्यादा है।

कुल मिलाकर इसका मतलब यह कि पर्यावरण विनाश की ओर बढ़ती मानव सभ्यता के कदमों पर ब्रेक लगाने की क्षमता भी अब हमारे पास नहीं बची है। साफ है कि सुधार के लिए अंतिम पलों का इंतजार आत्मघाती होगा। हमें ग्लोबल वॉर्मिंग की रफ्तार घटाने के हर संभव प्रयास अभी से और लगातार जारी रखने होंगे ताकि हमारे ग्रह का असंतुलित पर्यावरण इस सदी के बीतने से पहले अपना संतुलन वापस पा ले।